JETIR.ORG ISSN: 2349-5162 | ESTD Year : 2014 | Monthly Issue
JOURNAL OF EMERGING TECHNOLOGIES AND INNOVATIVE RESEARCH (JETIR)
An International Scholarly Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

# विद्यार्थियों में नैतिक उत्तरदायित्व की भावना का तुलनात्मक अध्ययन

अरविन्द कुमार आर्य (शोधार्थी)
डॉ., विभा चौहान, (शोध निर्देशिका)
सहायक प्राध्यापिका, शिक्षा विभाग
जे. एस. विश्वविद्यालय, शिकोहाबाद

**सारांश**

*मूल्य जीवन के वे मार्गदर्शक सिद्धांत हैं जो व्यक्ति के सर्वांगीण विकास में योगदान करते हैं। वे जीवन को एक दिशा देते हैं और इस प्रकार आनंद, संतुष्टि और शांति लाते हैं। मूल्य जीवन में गुणवत्ता जोड़ते हैं। इस प्रकार, कोई कह सकता है कि कोई भी मानवीय गतिविधि, विचार या विचार, भावना, भावना या भावना, जो किसी व्यक्ति के आत्म–विकास को बढ़ावा देती है, एक मूल्य का गठन करती है। मूल्य का दूसरा संगत कार्य यह है कि इसे परिवार, समुदाय और राष्ट्र जैसी बड़ी सामाजिक इकाई के कल्याण में भी योगदान देना चाहिए, जिसका एक व्यक्ति घटक है। शिक्षा सुविधाजनक सीखने या ज्ञान, कौशल, मूल्यों, नैतिकता, विश्वास और आदतों के अधिग्रहण की प्रक्रिया है। यह एक महत्वपूर्ण मानव अधिकार है और मानव सामाजिक आर्थिक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है जो नैतिक या मूल्य शिक्षा पर प्रभाव डालती है। साथ ही।आज हमारा देश भ्रष्टाचार, गरीबी, अशिक्षा, नशाखोरी, दहेज के कारण महिलाओं की मृत्यु, ऑनर किलिंग और कई अन्य सामाजिक समस्याओं के कारण गंभीर दौर से गुजर रहा है। कारण यह है कि छात्र जीवन में बच्चों को नैतिक एवं आध्यात्मिक शिक्षा नहीं दी जा रही है और शिक्षक अब रोल मॉडल नहीं रह गये हैं। मनुष्य में सर्वश्रेष्ठ का विकास शिक्षा का एक प्रमुख उद्देश्य माना जाता है।*

**शब्द कुंजी** : माध्यमिक स्तर, नैतिक उत्तरदायित्व

## 1. प्रस्तावना

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। समाज एवं राष्ट्र की उन्नति मानव पर ही निर्भर करती है, इसलिये यह आवश्यक है कि प्रत्येक मानव जो उसकी क्षमतानुसार स्वतंत्रता पूर्वक विकास करने की सुविधा प्राप्त हो, इसके लिये शिक्षा प्राप्त करना अति आवश्यक है। शिक्षा के क्षेत्र में मनोविज्ञान ने व्यक्ति की आंतरिक शक्तियों, नैतिक विकास मानव मूल्यों और सामाजिक पर्यावरण को समझने में अधिक सहयोग दिया है।

मनुष्य को प्रतिदिन अपने जीवन में विभिन्न प्रकार के अनुभव होते रहते है। समय के साथ–साथ इन अनुभवों में वृद्धि होती जाती है। इन्ही अनुभवों में कुछ इतने सशक्त होते है कि वे सामान्य को निर्देशित करने लगते है। ये

व्यक्ति के लिये पथ प्रदर्शक का कार्य करने लगते है तथा उसने जीवन में विशिष्टता ला देते है। ऐसे ही सिद्धांतों को मूल्य के नाम से जाना जाता है।

प्राथमिक स्तर पर सिखाया जाने वाले नैतिक मूल्य जीवन पर्यन्त स्थायी हो जाते है अतः बाल्यावस्था में सर्वाधिक नैतिक मूल्यों को विकसित व पल्लवित किया जाना चाहिये जिससे एक आदर्श व सशक्त व्यक्त्वि के रूप में बालक समाज में अपनी पहचान बना सके और ये सब तभी संभव है जब बालक को प्रारम्भ से ही अनुशासन व नैतिक व्यवहार, आचरण व अभिवृत्तियों को अपनाने की शिक्षा दी जाये।

मनुष्य एक ऐसा प्राणी है जो सदैव एक–दूसरे से प्रेरित होकर तुरंत सीखता है और जन्म से लेकर मृत्यु तक सीखता रहता है। सीखने की यह प्रक्रिया अनवरत चलती रहती है। सीखना मनुष्य का परम कर्त्तव्य है और यह सदैव सीखता रहता है। अपने आस–पास के वातावरण से अपनों से बड़े एवं छोटी उम्र वालों से, प्रकृति से एवं सभी आस–पास के प्राणियों से सदैव एक नई शिक्षा ध्यान करने पर उसे मिलती रहती है। यदि वह उस पर ध्यान केन्द्रित करता है तो यह शिक्षा उसकी अनौपचारिक शिक्षा होती है जिसमें उसे अवलोकन से ही ज्ञान प्राप्त होता है और वह समाज में रहकर ही ज्ञान प्राप्त करता है।

बालक की सर्वप्रथम गुरू उसकी मां होती है जो उसे परिवार में आते ही नैतिकता का पाठ सीखाना आरम्भ कर देती है। छोटी–छोटी बातों से बालक अपनी मानसिक योग्यतानुसार सीखता जाता है और वह वैसा ही व्यवहार करना प्रारम्भ करता है जैसा उसकी माता ने तथा घर के बड़े बुजुर्गो से सीखा है। इस प्रकार प्रत्येक मनुष्य का परिवार ही नवजात शिशु एवं बाल्यावस्था में प्रथम पाठशाला होता है। वह नैतिकता का ज्ञान परिवार से प्राप्त करता है तत्पश्चात् वह सामाजिक क्रियाओं को समाज द्वारा सीखता है। परिवार के अन्य सदस्यों से वह व्यवहार करना तथा विचारों को किस प्रकार प्रकट करना और अपनी वैचारिक प्रस्तुति को प्रकट करना सीखता है। मनुष्य के इस प्रकार से व्यवहार करने से उसकी व्यक्तिगत मानसिक योग्यताओं का अवलोकन किया जाता है। बालक कितना संस्कार वाला है और किस प्रकार से उसका लालन–पालन हुआ है, कैसे वह अपनी योग्यता को रखता है और किस प्रकार वह अपनों से बड़े एवं छोटे लोगों से व्यवहार करता है इन सभी बातों का परीक्षण हम उसकी योग्यता एवं उसके प्रदर्शन से करते है।

प्रत्येक समाज अपने सदस्यों को सही तथा गलत व्यवहार का ज्ञान देता है, जिसे हम नैतिक व्यवहार कहते है। समाज के सदस्य जो कि प्रत्येक घर में होते है कभी भी किसी को गलत शिक्षा नहीं देते है, प्रत्येक व्यक्ति जो समाज का बड़ा या छोटा सदस्य हो उसे उचित शिक्षा प्रदान की जाती है। बचपन से ही बालक जब जन्म लेता है तथा जब वह युवा अवस्था में प्रवेश करता है उसे समाज के दायित्वों का निर्वहन करते हुये प्रौढ़ता की ओर बढ़ता है।

नैतिक गुणों को अमल में लाना ही नैतिक शिक्षा है। यह ध्यान रखा जाना चाहिये कि सबसे अच्छी नैतिक शिक्षा वही है जो अपने आचरण द्वारा दी जाये, केवल पुस्तकीय ज्ञान नैतिक शिक्षा के उद्देश्य नैतिक मूल्यों को सम्मिलित करें। ऐसे पाठ्यक्रम का निर्माण हो जिससे हमें नैतिक एवं सद्चरित्र वाले युवा मिले जो कि इस देश

की धरोहर है। उन्ही के हाथ देश की बागडोर है और उनकी सोच समझ से ही देश की उन्नति संभव है। यदि वे सकारात्मक सोच रखते है और उनके द्वारा किये गये सभी कार्य पूर्ण रूप से ठीक होंगे तो सभी कार्य उचित होंगे। इस प्रकार से सभी व्यक्ति अपना कार्य आसानी से और देश हित मे करेगा वह अन्यथा कार्य जो कि सभी के लिये हानिप्रद है, नही करेंगा और अपने जीवन को सही दिशा में कार्य कर आगे बढ़ाने का प्रयास करेगा।

**शोध की आवश्यकता**

हम आये दिन समाचार पत्रों और टीवी चैनल में अनेक प्रकार की खबरे पढ़ते, सुनते और देखते है, जिनमें अधिकांश खबरे भ्रष्टाचार, घूसखोरी, मिलावट, अपहरण, चोरी, बलात्कार, हिंसा तथा हत्या आदि से भरी होती है। हमारे समाज को यह क्या हो रहा है? लोग अपनी चेतना को मार कर पैसे के पीछे क्यों भाग रहे है? हमारे समाज में मूल्य धीरे–धीरे समाप्त होते जा रहे है। कुछ लोग अनैतिक माध्यमों से सम्पत्ति का संचय तथा ताकत प्राप्त कर रहे है। अपने समाज में हम ऐसा क्यों होने दे रहे है? हमें अपने समाज के इस पतन और इन गतिविधियों को रोकने के लिये नागरिकों में नैतिक उत्तरदायित्व बोध की अलख जगानी होगी, इसके लिये यह अत्यन्त आवश्यक है कि हम में से प्रत्येक व्यक्ति जीवन के हर क्षेत्र में मूल्यों का अनुसरण करे। यदि इन मूल्यों का और नैतिक उत्तरदायित्व बोध का अनुसरण नहीं किया जाये तो सोचिये हमारे समाज का क्या होगा? इस बारे में निष्कर्ष आसानी से किया जा सकता है कि इसका परिणाम क्या होगा?

**सम्बन्धित शोध कार्यो का पुनरावलोकन**

**कनिका (2016)** ने किशोरों के मूल्यों और शैक्षणिक उपलब्धि के साथ इसके संबंध पर अध्ययन किया। यह अध्ययन शहरी और ग्रामीण क्षेत्रों के विभिन्न सरकारी और गैर–सरकारी प्रबंधित स्कूलों से यादृच्छिक नमूनाकरण तकनीकों का उपयोग करके हिमाचल प्रदेश के विभिन्न स्कूलों में पढ़ने वाले 400 माध्यमिक विद्यालय के छात्रों पर सीमित था। वर्तमान अध्ययन में डेटा एकत्र करने के लिए आर.के. ओझा द्वारा विकसित मानकीकृत उपकरण का उपयोग किया गया था। अध्ययन के निष्कर्ष से पता चला कि मूल्यों और शैक्षणिक उपलब्धि के बीच संबंध 0.05 के स्तर पर एक महत्वपूर्ण संबंध उत्पन्न करता है। छात्रों की शैक्षणिक उपलब्धियों के बीच उनके सौंदर्य मूल्यों के संबंध में सहसंबंध का गुणांक 0.05 के महत्व के स्तर पर सकारात्मक और अत्यधिक महत्वपूर्ण था।

**पिटल, स्टीफन और मेंडेलसोहन, गेराल्ड (2016)** नैतिक मूल्यों के मापन पर अध्ययनः एक समीक्षा और आलोचना। नैतिक मूल्यों की ताकत तक पहुंचने के लिए साहित्य की ऐतिहासिक समीक्षाओं के प्रयासों से यह निष्कर्ष निकला कि मौजूदा उपकरणों में कमजोरी है जो प्रतिबंधित करती है मनोवैज्ञानिक अनुसंधान के लिए उनकी उपयोगिता। यह निष्कर्ष निकाला गया है कि नैतिक मूल्यों को व्यक्तिगत दृष्टिकोण और व्यक्तिपरक के रूप में सबसे अच्छी तरह से अवधारणाबद्ध किया जाता है, जिसका माप पारंपरिक मानकों और नैतिक मूल्यांकन के नैतिक व्यवहार के साथ चिंता से स्वतंत्र रूप से सबसे सार्थक रूप से प्राप्त किया जाता है।

**न्गुसा, मेकेवा और एलिडा (2016)** ने लेक जोन, तंजानिया में माध्यमिक विद्यालय मानविकी पाठ्यक्रम में नैतिक मूल्यों के एकीकरण पर अध्ययन किया। परिणामों से पता चला कि ईसाई धार्मिक शिक्षा, इतिहास, भूगोल और नागरिक शास्त्र जैसे विषयों को पढ़ाने वाले मानविकी द्वारा नैतिक मूल्यों के एकीकरण में कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं है। नैतिक मूल्यों को एकीकृत करने में ईसाई धार्मिक शिक्षा इतिहास, भूगोल और नागरिक शास्त्र जितनी ही महत्वपूर्ण है।

**किटजारूनचाई (2015)** द्वारा एक ईसाई संस्थान में छात्रों की नैतिक गतिविधियों में नैतिक भागीदारी और शैक्षणिक उपलब्धि के बीच संबंध पर एक अध्ययन किया गया था। शोध कार्य से पता चला कि छात्रों की शैक्षणिक व्यस्तता और उनकी व्यस्तता और आध्यात्मिक गतिविधियों के बीच सांख्यिकीय रूप से महत्वपूर्ण अंतर है। शोध कार्य के नतीजे बताते हैं कि छात्रों के शैक्षणिक प्रदर्शन और आध्यात्मिक और नैतिक गतिविधियों में उनकी भागीदारी के बीच सांख्यिकीय रूप से सकारात्मक संबंध था।

**मुरुआ (2015)** ने वयस्कता में नैतिक पहचान विकास पर अध्ययन किया। मौजूदा शोध कार्य का उद्देश्य किसी व्यक्ति द्वारा किशोरावस्था और मध्य आयु के बीच अनुभव प्राप्त नैतिक स्वीकृति में परिवर्तन की जांच करके नैतिक स्वीकृति पर किए गए कार्य को व्यापक बनाना था। निष्कर्ष से पता चला कि सबसे पहले नैतिक स्वीकृति में आयु वर्ग के अंतर हैं। दूसरे, समय आने पर व्यक्ति की नैतिक मान्यता में वृद्धि होती है। तीसरा, आयु समूह चेतना और सहमतता के व्यक्तित्व चरित्र की जाँच के समय नैतिक स्वीकृति में योगदान देता है, लेकिन यह विक्षिप्तता की जाँच नहीं करता है, एक तीसरा व्यक्तित्व जो नैतिक स्वीकृति के साथ बंद अंतरंगता के लिए मौजूद था।

**संदीप कौर (2015)** ने शिक्षा में नैतिक मूल्यों पर यह शोध कार्य प्रस्तुत किया। इस लेख का उद्देश्य सामूहिक जिम्मेदारियों को वितरित करने के लिए दिए गए उचित विचार के साथ बच्चे की नैतिक शिक्षा का पता लगाना है। शोध पत्र में यह उत्तर देने की पूरी कोशिश की गई है कि ''बच्चे को नैतिक शिक्षा प्रदान करने के लिए सामूहिक रूप से कौन जिम्मेदार है, या जिन अध्ययन केंद्रों में छात्र पढ़ते हैं, उनकी पूरी जिम्मेदारी क्रिस्टल की तरह स्पष्ट है कि पूरी जिम्मेदारियाँ किसके कंधों पर नहीं जाती हैं'' स्कूल में शिक्षक के साथ–साथ माता–पिता भी छात्रों को नैतिक शिक्षा देते हैं। माता–पिता बच्चों को नैतिक नैतिकता के आधार पर जीवन जीने के बारे में जागरूक करने में सक्रिय भूमिका निभा सकते हैं।

**समस्या शीर्षक**

'विद्यार्थियों में नैतिक उत्तरदायित्व की भावना का तुलनात्मक अध्ययन'

## 2. शोध के उद्देश्य

प्रस्तावित अध्ययन हेतु निम्न उद्देश्यों का निर्धारिण किया गया है–

1.माध्यमिक स्तर में अध्ययनरत छात्रों में नैतिक उत्तरदायित्व की भावना का अध्ययन करना।

2.माध्यमिक स्तर में अध्ययनरत छात्राओं में नैतिक उत्तरदायित्व की भावना का अध्ययन करना।

## 4. शोध की परिकल्पना

1.माध्यमिक स्तर में अध्ययनरत छात्रों एवं छात्राओं में नैतिक उत्तरदायित्व की भावना में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

## 5.परिसीमा एवं न्यादर्श

प्रस्तुत शोध कार्य प्रस्तुत शोधकार्य उत्तर प्रदेश के झाँसी जिले की तहसील मऊरानीपुर के शहरी क्षेत्र में संचालित माध्यमिक स्तर के विद्यालय की कक्षा 9वी में अध्ययन छात्र छात्राओं पर सम्पन्न किया गया है।

## शोध का क्षेत्र

प्रस्तुत शोधकार्य हेतु उत्तर प्रदेश राज्य के झाँसी जिले की तहसील मऊरानीपुर अध्ययन के क्षेत्र के रूप में चयनित किया गया है।

## शोध पद्धति

प्रस्तुत शोध समस्या के लिये शोध की सर्वे विधि का प्रयोग किया गया है। संमकों में प्राथमिक समंको में न्यादर्शो की प्रतिक्रिया तथा द्वितीयक समंकों के रूप में सम्बन्धित विद्यालयी अभिलेखों तथा प्रपत्रों को शामिल किया गया है।

## शोध हेतु न्यादर्श

किसी भी शोध हेतु प्रदत्तों के एकत्रीकरण के न्यादर्शो का प्रतिचयन किया जाना आवश्यक होता है। प्रस्तुत शोध कार्य हेतु झाँसी जिले की तहसील मऊरानीपुर के शहरी क्षेत्र में संचालित माध्यमिक स्तर के विद्यालय की कक्षा 9वी में अध्ययन 30 छात्र एवं 30 छात्राओं को यादृच्छिक प्रतिचयन प्रविधि द्वारा न्यादर्श रूप में चयनित किया गया है।

## प्रयुक्त सांख्यिकीय प्रविधि

प्रस्तुत शोध हेतु परीक्षण विकसित करने एवं समंको की व्याख्या करने के लिये उपयुक्त सांख्यिकीय विधियों का प्रयोग करके समंकों का विश्लेषण किया गया। अध्ययन के उद्देश्यों के अनुसार परिकल्पना का परीक्षण का परीक्षण कर निष्कर्ष को प्रतिपादित किया गया। प्रयुक्त सांख्यिकीय विधियों के अन्तर्गत मध्यमान, माध्य विचलन, माध्य मानक विचलन, माध्य मानक त्रुटि एवं टी–परीक्षण को प्रयुक्त कर आवश्यकतानुसार दण्ड आरेख का निरूपण किया गया है।

सारणी क्रमांक – 1

माध्यमिक स्तर में अध्ययनरत छात्रों एवं छात्राओं में नैतिक उत्तरदायित्व की भावना के अध्ययन का सांख्यिकीय विश्लेषण

| क्र | विवरण | N | M | Sd | SEM | SED | t-value | p -value |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 1 | अध्ययनरत छात्र | 30 | 9.60 | 0.93 | 0.17 | 0.309 | 27.1630 | <0.0001 |
| 2 | अध्ययनरत छात्रायें | 30 | 18 | 1.41 | 0.26 | | | |

Df = N1+N2-2=58

p<.05 सार्थकता स्तर पर सार्थक

दण्ड आरेख – 1

माध्यमिक स्तर में अध्ययनरत छात्रों एवं छात्राओं में नैतिक उत्तरदायित्व की भावना के अध्ययन के सांख्यिकीय विश्लेषण का दण्ड आरेख

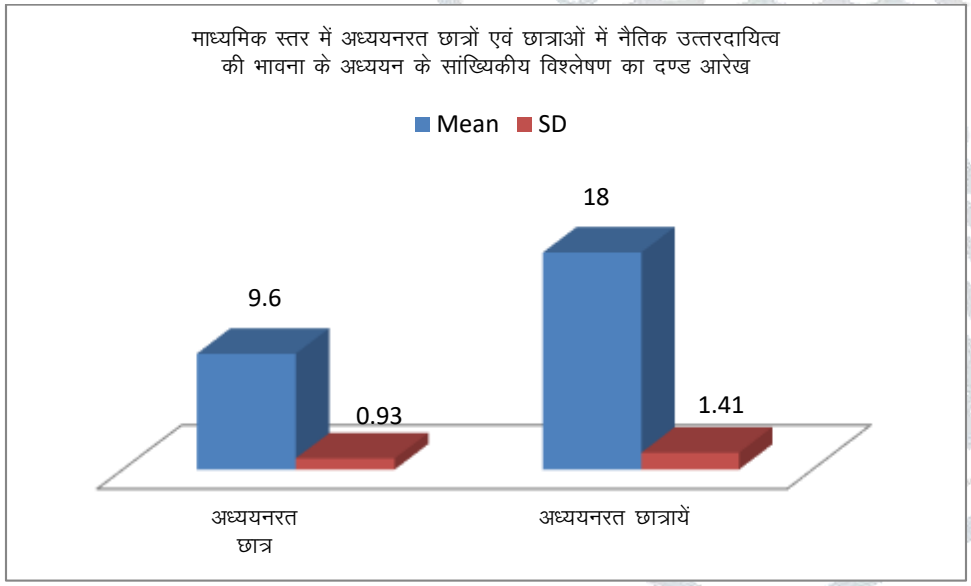


## प्रदत्तों का विश्लेषण

सारणी क्रमांक – 1 के विश्लेषण से प्राप्त होता कि माध्यमिक स्तर में अध्ययनरत छात्रों एवं छात्राओं में नैतिक उत्तरदायित्व की भावना के अध्ययन के सांख्यिकीय विश्लेषण में अध्ययनरत छात्रों से सम्बन्धित प्राप्तांकों का मध्यमान , माध्य विचलन तथा माध्य मानक त्रुटि है, जबकि अध्ययनरत छात्राओं से सम्बन्धित प्राप्तांकों का मध्यमान , माध्य विचलन तथा माध्य मानक त्रुटि है। प्राप्त प्राप्तांकों के सांख्यिकीय विश्लेषण से ज्ञात होता है कि माध्यमिक स्तर में अध्ययनरत छात्रों एवं छात्राओं में नैतिक उत्तरदायित्व की भावना के अध्ययन के सांख्यिकीय विश्लेषण में टी–परीक्षण मूल्य तथा पी–मूल्य < 0.0001 पाया गया है, जो p<.05 सार्थकता स्तर पर सार्थक है।

**परिकल्पना का परीक्षण**

सारणी के विश्लेषण से ज्ञात होता कि माध्यमिक स्तर में अध्ययनरत छात्रों एवं छात्राओं में नैतिक उत्तरदायित्व की भावना अध्ययनरत छात्रों में नैतिक उत्तरदायित्व की भावना अध्ययनरत छात्राओं की तुलना में निम्न पायी गयी है, जबकि छात्राओं में नैतिक उत्तरदायित्व की भावना अपेक्षाकृत उच्च पायी गयी है। इसलिये पूर्व निर्मित शून्य परिकल्पना – माध्यमिक स्तर में अध्ययनरत छात्रों एवं छात्राओं में नैतिक उत्तरदायित्व की भावना में कोई सार्थक अन्तर नहीं है', को अस्वीकृत किया जाता है।

**सन्दर्भ**


1. *अरूण कुमार सिंह. (2005), "उच्चतर सामान्य मनोविज्ञान", मोतीलाल बनारसी दास प्रकाशन अकादमी, नई दिल्ली.*

2. *Best, J. W., & Kahn, J. V., (2003).* ***Research in Education****(9th Ed.) Pearson Education, Inc., Delhi. 213*

3. *Bhatnagar, S. (1990).* ***Indian Education Today and Tomorrow****, Meerut, International Publishing House.*

4. *Chandra, & Rajendra (2004).* ***Principales of Education*** *Delhi, Atlantic Publishers and Distributors.*

5. *Crerwel, J. W. (2011).* ***Research Design****, New Delhi, Sage publication India*

6. *Kanika, (2016).* ***Values of adolescents and its relationship with academic achievement,*** *http://ijariie.com/AdminUploadPdf. retrieved on 19.01.17Lee, S. (2007).* ***The Relationship between moral Development and Faith Maturity in the Korean***

7. *कपिल, एच. के. 'सांख्यिकी के मूलतत्व', विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा।*

8. *Murua, L. A. (2015).* ***Moral identity development in adulthood,*** *http://scholars.wlu.ca/etd retrieved on 22.01.2017.*

9. *Ngussa, B. M., Makewa, L.N. &Allida, D. (2016).* ***Integration of Moral Values in the secondary school Humanities Curriculum Across Lake Zone, Tanzania.****International Journal of Education Policy Research and Review. 3(7), p.p. 117-125. https// Journalissues.org/ abstract/ngussa-et.al retrieved on sep 2016. 223*

10. *Pittel, Stephen, Mendelsohn, Gerald (2016).* ***Measurement of moral values:*** *A review and critique. Psychological Bulletin, Vol 66(1), p.p 22-35.http://dx.doi.org retrieved on 8/07/2017*

11. *Sandeep, Kaur. ( 2015).* ***Moral Values In Education*** *IOSR Journal Of Humanities And Social Science (IOSR-JHSS, Vol. 20, Issue 3, Mar. 2015, PP 21-26 de09cd3.pdf retrieved on 11/07/2017.*

12. *शर्मा, आर.के. व दुबे, श्रीकृष्ण (2007) 'मूल्यों का शिक्षण', राधा प्रकाशन मंदिर, आगरा।*

13. *श्रीवास्तव, डी.एन., (नवीन संस्करण) 'सांख्यिकी एवं मापन', विनोद पुस्तक मंदिर,आगरा।*

14. *योगजेन्द्र सिंग (2013), 'माध्यमिक स्तर के एकल एवं संयुक्त परिवारों के विद्यार्थियों की अभिवृत्ति, समायोजन, नैतिक मूल्यों एवं आकांक्षा स्तर का तुलनात्मक अध्ययन'।*